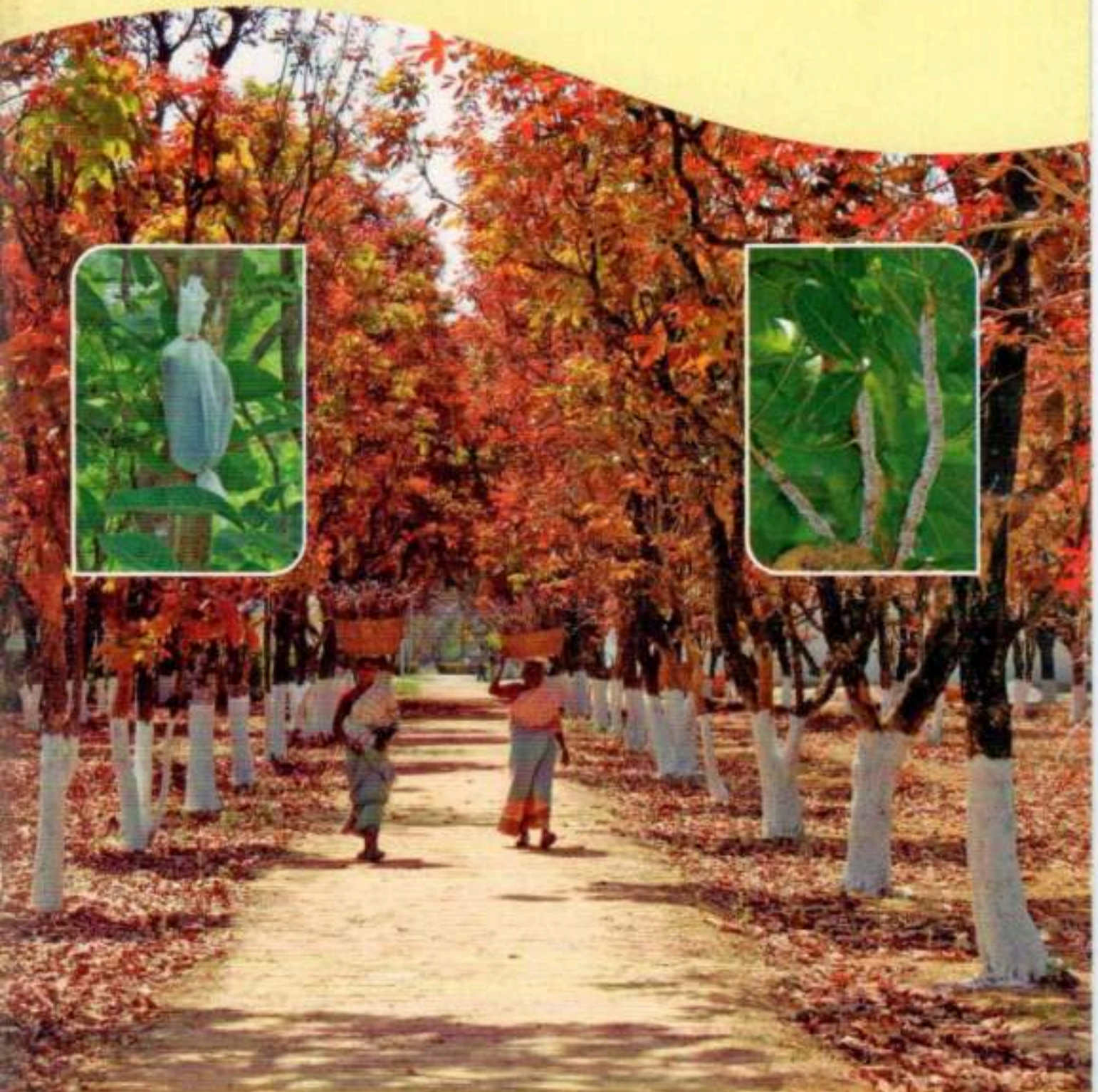


कुसुम वृक्ष पर लाख की वैज्ञानिक खेती



भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

नामकुम, राँची - 834010, झारखण्ड

दूरभाष: 0651-2261154, फैक्स: 0651-2260202

ई-मेल: iinrg@ilri.ernet.in | हमसे संपर्क करें : <http://ilri.ernet.in>



कुसुम (स्लीचेरा ओलियोसा) या कोसम, सैपिन्डेसी कुल के वृक्ष को "लाख वृक्ष" के नाम से भी जाना जाता है अधिकतर वृक्ष वनों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में महुये के वृक्ष की भाँति होते हैं, वृक्षों का आकार भी इसी प्रकार का होता है। फरवरी-मार्च माह में पतझड़ के समय नये पत्तों का रंग काफी आकर्षक एवं लगभग लाल होता है। कुसुम बीज का तेल जलाने एवं अन्य कार्यों में उपयोग किया जाता है। कुसुम वृक्षों पर रंगीनी प्रजाति के लाख कीट का पालन नहीं किया जा सकता। अतः रंगीनी एवं कुसुमी लाख कीट में भेद करने के लिये यह एक अच्छा वृक्ष है। इस वृक्ष पर ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन दोनों मौसम में लाख कीट को पाला जा



कुसुम वृक्ष

सकता है। रंगीनी लाख कीट की तुलना में कुसुमी लाख कीट नजदीक-नजदीक बैठते हैं एवं इनकी लाख उत्पादन क्षमता रंगीनी के मुकाबले अधिक होती है। कुसुमी लाख से अगहनी (शीतकालीन) और जेठवी (ग्रीष्मकालीन) फसल क्रमशः जून-जुलाई से जनवरी-फरवरी तथा जनवरी-फरवरी से जून-जुलाई तक की होती है। सामान्य परिस्थिति में कुसुम वृक्ष पर कुसुमी कीट की उत्पादन क्षमता छः माह की फसल में 7-8 गुनी होती है जिसका तात्पर्य है कि एक कि.ग्रा. बीहन लाख लगाने से 7-8 कि.ग्रा. बीहन का उत्पादन आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। कुसुम वृक्ष आकार में काफी विशाल होते हैं। सामान्यतः एक वृक्ष पर

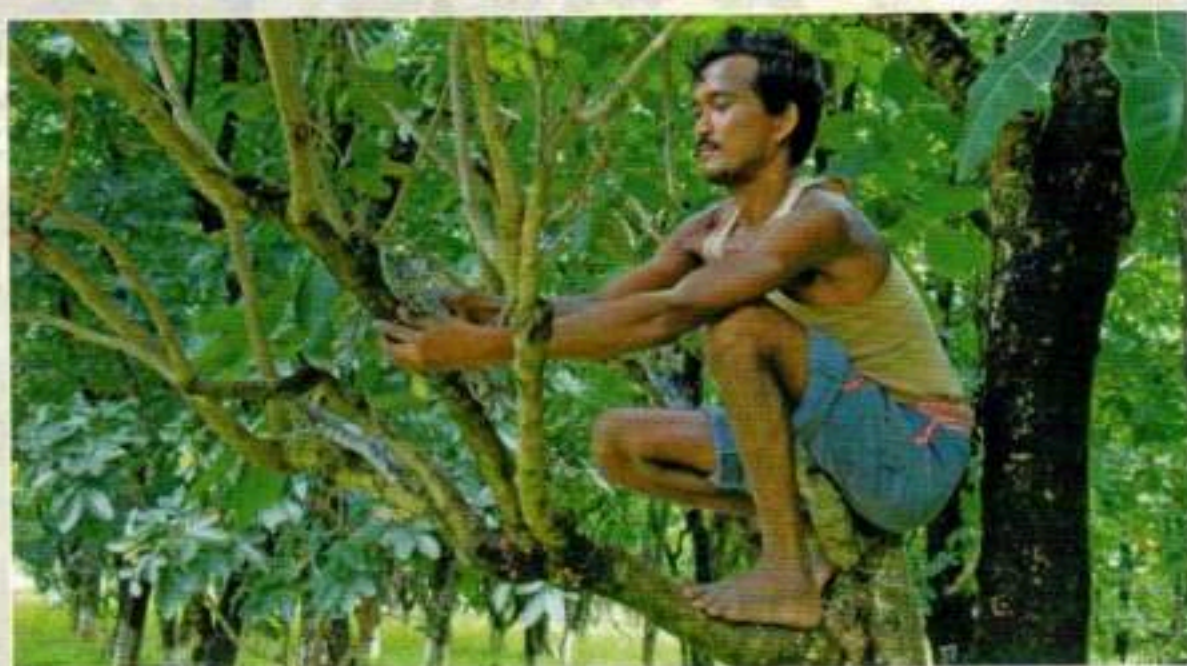
4 से 6 कि.ग्रा. बीहन लाख की आवश्यकता होती है जिससे छः माह पश्चात 30-45 कि.ग्रा. बीहन लाख प्राप्त किया जा सकता है।

वृक्षों की काट-छाँट:

सामान्य परिस्थितियों में पर्याप्त और उपयुक्त लम्बाई की नर्म टहनियों को पाने के लिये कीट-संचारण के 18 माह पूर्व यह कार्य कर लेना चाहिये लेकिन पहली बार काट-छाँट करने के 12 माह पश्चात ही कीट-संचारण कर सकते हैं। पहली बार कटाई-छँटाई करते समय मोटी डालियों को भी काटना पड़ सकता है। कुसुम वृक्ष की काट-छाँट का सही समय जनवरी-फरवरी अथवा जून-जुलाई है और इसी समय लाख कीट भी परिपक्व होती है।

कीट संचारण:

वृक्षों की नर्म टहनियों पर शिशु कीट फैलाने की प्रक्रिया ही कीट संचारण कहलाती है। इसके लिये बीहन लाख टहनियों के लगभग 6" के टुकड़े काट लेते हैं, काटते समय बीहन लाख टहनियों के ऐसे भाग जिस पर पपड़ी नहीं है, हटा देते हैं। बीहन की कटाई रोलकट सिकेटियर (एक तरफा ब्लेड) से करते हैं। लगभग 100 ग्राम बीहन का बण्डल को दोनों ओर से प्लास्टिक सुतली से बाँध लेते हैं, बड़ी हुई सुतली से मोटी डाली पर इस प्रकार बाँधते हैं कि इससे



कुसुम वृक्ष की टहनियों पर बीहन लाख लगाते हुए

निकले हुये शिशु कीट आगे उपलब्ध नर्म टहनियों पर पूर्ण रूप से बैठ जायें। यदि 60 मेश नाइलान जाली के थैले (27 X 10 से.मी.) उपलब्ध हो तब बीहन लाख इसमें भरकर डालियों पर बाँधना चाहिये। इससे एक तो छोटे बीहन टुकड़े का भी उपयोग हो जाता है तथा शत्रु कीटों की रोकथाम का उपाय भी हो जाता है।

फुंकी हटाना एवं बिक्री:

बीहन लाख से सम्पूर्ण लाख शिशु कीट निर्गमन के पश्चात बची लाख डंडी ही फुंकी लाख कहलाती है जैसे ही इसमें से कीट निर्गमन समाप्त हो इसे वृक्षों से उतारकर छील देना चाहिये एवं क्रय भी कर देना चाहिये।

जेठवी फसल सुरक्षा के उपाय:

- प्रारम्भिक अवस्था में बीहन लाख वृक्षों पर चढ़ाने के 28-30 दिन पर इन्डोक्साकार्ब 0.007 प्रतिशत एवं कारबेन्डाजिम 0.05 प्रतिशत का लाख टहनियों पर छिड़काव।
- क्राइसोपा का आक्रमण होने पर दूसरा छिड़काव भी इसी दवा का 60-62 दिन पर (बीहन पेड़ों पर चढ़ाने से)
- अधिक तापमान से बचाने हेतु शाम को कभी-कभी वृक्षों पर पानी का छिड़काव।
- इन्डोक्साकार्ब 0.007 प्रतिशत घोल = 0.5 मि.ली. इन्डोक्साकार्ब दवा प्रति लीटर पानी एवं कारबेन्डाजिम हेतु इसी के 1.5 ली. घोल में लगभग 1.5 ग्राम पाउडर।

अगहनी फसल सुरक्षा के उपाय:

- क्राइसोपा का आक्रमण होने पर बीहन चढ़ाने के 25-30 दिन पर इथोफेनप्राक्स 0.02 प्रतिशत (बम्बार्ड 10 ई.सी.) एवं फफूंदनाशक कारबेन्डाजिम 0.05 प्रतिशत का छिड़काव।

- उपरोक्त मिश्रित दवा या इन्डोक्साकार्ब या फिप्रोनिल का दूसरा छिड़काव 38–40 दिन पर (क्राइसोपा के अंडे या इल्ली दिखने पर)
- 62–65 दिन पर तीसरा छिड़काव क्राइसोपा के अंडे या इल्लियाँ होने पर उपरोक्त तीनों में से कोई एक कीटनाशक एवं साथ में कारबेन्डाजिम फफूंदनाशक पाउडर भी मिलाकर देना चाहिये।

वृक्षों का बंटवारा:

फसल कटाई के पश्चात कुसुम का वृक्ष सामान्यतः 18 माह पश्चात पुनः लाख कीट संचारण हेतु तैयार होता है अतः फसल चक्र के क्रम को बनाये रखने के लिये पेड़ों को खण्ड में बाँट कर लाख उत्पादन करना ही उचित है। प्रत्येक वृक्ष का उपयोग निम्न विधि से करते हैं।



- कुल उपलब्ध वृक्षों को 4–5 खण्डों में आवश्यकतानुसार बाँट लें (कम वृक्ष हों तो 4 अन्यथा 5 खण्डों में)।
- प्रत्येक खण्ड के वृक्षों को 6 माह के अन्तराल पर काट-छाँट करें।



लाख लगी कुसुम की टहनियाँ



कुसुम का बगान

- काट-छाँट के 18 माह पश्चात (पहली बार 12 माह पश्चात) कीट संचारण करें (20 ग्राम बीहन प्रति मीटर नर्म टहनी की दर से)।
- कीट संचारण के 6 माह पश्चात आंशिक फसल कटाई करें (मोटी एवं लगातार पपड़ी वाली टहनी काट लें और अन्य छोड़ दें)।
- आंशिक काट-छाँट के छः माह पश्चात सम्पूर्ण फसल काट लें एवं इसी समय वृक्षों की काट-छाँट भी कर दी जाती है।
- बीहन कटाई तभी करें जब शिशु कीट निकलना प्रारम्भ हो।
- खण्ड प्रणाली के अन्तर्गत आंशिक कटाई से प्राप्त बीहन को दूसरे खण्डों के वृक्ष पर चढ़ाते हैं एवं सम्पूर्ण कटाई से प्राप्त बीहन बाजार में बेच देते हैं।

संपर्क सूत्र :

प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण विभाग

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान

नामकुम, राँची - 834010

फोन: 0651-2261154